साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 12, अंक : 27 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 1 जुलाई 2026 से 7 जुलाई 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

2050 तक उष्णकटिबंधीय क्षेत्र होगा दुनिया की बड़ी आबादी का रहने वाला स्थान

नई दिल्ली। हर साल 29 जून को अंतरराष्ट्रीय उष्णकटिबंधीय दिवस मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य दुनिया के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के महत्व, उनकी विविधता और वहां मौजूद चुनौतियों के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है। इस दिवस की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र महासभा के एक प्रस्ताव के बाद साल 2016 में हुई थी। यह निर्णय 2014 में जारी हुए स्टेट ऑफ द ट्रॉपिक्स रिपोट की वर्षगांठ के अवसर से जुड़ा हुआ था। इस रिपोर्ट को दुनिया के 12 प्रमुख उष्णकटिबंधीय अनुसंधान संस्थानों ने मिलकर तैयार किया था।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्र क्या है? उष्णकटिबंधीय क्षेत्र पृथ्वी का वह भाग है जो कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच स्थित है। यह क्षेत्र पृथ्वी के मध्य भाग में फैला हुआ है। इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता इसका गर्म मौसम है। यहां तापमान पूरे साल लगभग समान रहता है और मौसम में बहुत अधिक बदलाव नहीं होता। जैसे-जैसे कोई स्थान भूमध्य रेखा से दूर जाता है, वैसे-वैसे बारिश के मौसम में अधिक अंतर दिखाई देने लगता है।

इन क्षेत्रों में बारिश की मात्रा भी बड़ी भूमिका निभाती है। भूमध्य रेखा के पास के क्षेत्रों में भारी बारिश होती है, जिससे घने जंगल और जैव विविधता विकसित होती है। यही कारण है कि उष्णकटिबंधीय क्षेत्र दुनिया की सबसे समृद्ध प्राकृतिक विविधता वाले क्षेत्रों में गिना जाता है। अंतरराष्ट्रीय उष्णकटिबंधीय दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों को यह समझाना है कि यह क्षेत्र केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक रूप से भी बहुत महत्वपूर्ण है। संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि आने वाले समय में दुनिया के विकास में उष्णकटिबंधीय देशों की भूमिका और अधिक बढ़ेगी। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि इन क्षेत्रों की समस्याओं और संभावनाओं पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। यह दिवस विभिन्न देशों को एक मंच प्रदान करता है ताकि वे अपने अनुभव, शोध और विकास की कहानियां साझा कर सकें।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्र न केवल प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर हैं, बल्कि यहां दुनिया की बड़ी आबादी भी निवास करती है। अनुमान है कि साल 2050 तक दुनिया की अधिकांश जनसंख्या इन्हीं इलाकों में होगी और बच्चों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा भी यहीं रहेगा। इन क्षेत्रों में कृषि, वन संसाधन और जैव विविधता का बहुत बड़ा योगदान है। यहां की जलवायु और प्राकृतिक संसाधन वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित करते हैं। इसलिए इन क्षेत्रों का विकास पूरी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण है। हालांकि उष्णकटिबंधीय क्षेत्र विकास की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन यहां कई गंभीर चुनौतियां भी मौजूद हैं। जलवायु परिवर्तन इस क्षेत्र के लिए सबसे बड़ी समस्या बनता जा रहा है। बढ़ता तापमान, अनियमित बारिश और प्राकृतिक आपदाएं जीवन को प्रभावित कर रही हैं। जंगलों की कटाई भी एक बड़ी समस्या है। तेजी से हो रहे शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि के कारण जंगलों का क्षेत्र घट रहा है। इससे न केवल पर्यावरण प्रभावित हो रहा है, बल्कि कई जीव-जंतुओं का जीवन भी खतरे में पड़ रहा है। इसके अलावा, गरीबी, कुपोषण और झुग्गी-झोपड़ियों में जीवन जीने वाले लोगों की संख्या भी इस क्षेत्र में अधिक है। शहरों में बढ़ती आबादी के कारण बुनियादी सुविधाओं पर दबाव बढ़ रहा है।

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का भविष्य बहुत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यदि इन क्षेत्रों में सतत विकास पर ध्यान दिया जाए, तो यह पूरी दुनिया के लिए लाभकारी हो सकता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और तकनीकी विकास पर ध्यान देकर इन क्षेत्रों की स्थिति को बेहतर बनाया जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को हासिल करने में उष्णकटिबंधीय देशों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इन देशों को सही दिशा और सहयोग मिले, तो वे वैश्विक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय उष्णकटिबंधीय दिवस हमें यह समझने का अवसर देता है कि पृथ्वी का यह हिस्सा कितना महत्वपूर्ण और संवेदनशील है। यह केवल प्राकृतिक सुंदरता का क्षेत्र नहीं है, बल्कि मानव जीवन, अर्थव्यवस्था और भविष्य से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। इस दिन का संदेश यही है कि हमें उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की रक्षा करनी चाहिए और उनके सतत विकास के लिए मिलकर प्रयास करना चाहिए।

ग्रीन एनर्जी में सबसे आगे है मध्य प्रदेश

डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में अपने ही रिकॉर्ड तोड़ रहा मध्यप्रदेश

भोपाल केंद्रीय नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी ने टीवी प्रतिनिधियों से चर्चा में कहा कि नवकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में मध्य प्रदेश डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में अपने ही रिकॉर्ड तोड़कर देश में सबसे आगे है।

मप्र सभी राज्यों में उन्नत है , नई-नई परियोजनाओं से निरंतर आगे बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश ने ग्रीन एनर्जी अर्थात हरित ऊर्जा क्षेत्र में नया इतिहास रच रहा है। लगभग 950 मेगावाट सौर क्षमता देश को समर्पित हुई है। सबसे बड़ी बात देश की न्यूनतम दर वाली सोलर के साथ बैटरी ऊर्जा भंडारण परियोजना के लिए पीपीए पर भी हस्ताक्षर हुए हैं। मध्यप्रदेश ने अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए 500 मेगावाट नीमच सौर परियोजना और 450 मेगावाट शाजापुर सौर परियोजना का लोकार्पण किया। इसके पश्चात मुरैना सोलर के साथ बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम प्रोजेक्ट के लिए बिजली खरीदने के एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए गए। नीमच और शाजापुर सौर परियोजनाओं के लोकार्पण तथा मुरैना सोलर और बी ई एस एस परियोजना के पीपीए हस्ताक्षर हुए हैं।

जलवायु नीति का असली असर- 88 देशों और पांच अरब लोगों पर किए गए अध्ययन में क्या आया सामने?

नई दिल्ली। जर्मनी के पॉट्सडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इम्पैक्ट रिसर्च के एक नए अध्ययन ने यह समझने में मदद की है कि जलवायु नीतियों का असर आम लोगों पर कैसे पड़ता है। यह अध्ययन बताता है कि जब सरकारें कार्बन उत्सर्जन पर टैक्स लगाती हैं या ईंधन महंगा करती हैं, तो उसका बोझ केवल अमीर और गरीब के बीच ही नहीं, बल्कि एक ही आय वर्ग के लोगों के बीच भी बहुत अलग-अलग होता है।

यह शोध प्रतिष्ठित शोध पत्रिका जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट% में प्रकाशित किया गया है। जलवायु नीतियों का असर केवल अमीर-गरीब अंतर नहीं, बल्कि समान आय वाले परिवारों के बीच भी बड़ा अंतर दिखाता है। इस अध्ययन में बहुत बड़े स्तर पर आंकड़ों का उपयोग किया गया है। शोधकर्ताओं ने लगभग 88 देशों के 17 लाख घरों के खर्च के रिकॉर्ड का विश्लेषण किया। ये आंकड़े दिखाते है कि लोग अपनी आय को किन चीजों पर खर्च करते हैं -जैसे ईंधन, बिजली, खाना, यात्रा और घरेलू सामान आदि। इसके साथ ही, हर खर्च की वस्तु से जुड़े कार्बन उत्सर्जन का भी अनुमान लगाया गया। यानी यह देखा गया कि हर चीज खरीदने पर कितना कार्बन वातावरण में जाता है। इसके बाद मशीन लर्निंग तकनीक का उपयोग करके यह समझा गया कि अलग-अलग घरों पर जलवायु नीतियों का क्या असर पड़ता है। अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि जलवायु नीतियों का बोझ केवल अमीर और गरीब के बीच नहीं बंटा होता, बल्कि एक ही आय वर्ग के लोगों में भी बड़ा अंतर होता है। उदाहरण के लिए, दो परिवार जिनकी आय लगभग समान है, उनमें से एक के पास कार हो सकती है और दूसरे के पास नहीं। इसी तरह कोई परिवार शहर में रहता है और दूसरा ग्रामीण क्षेत्र में। इन छोटी-छोटी बातों से कार्बन लागत का असर बहुत बदल जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि पारंपरिक सोच, जिसमें केवल अमीर और गरीब के बीच अंतर देखा जाता है, वह पूरी तस्वीर नहीं दिखाती। शोध में पाया गया कि तीन मुख्य कारण लोगों पर जलवायु नीति के असर को तय करते हैं। पहला, वाहन का मालिक होना। जिन परिवारों के पास कार या मोटरसाइकिल है, उन पर ईंधन की कीमत बढ़ने का असर ज्यादा पड़ता है। दूसरा, रहने की जगह। शहर और गांव के बीच बुनियादी ढांचे और सुविधाओं का अंतर भी बड़ा प्रभाव डालता है। तीसरा, ऊर्जा उपयोग का तरीका। खाना पकाने के लिए कौन सा ईंधन इस्तेमाल होता है, घर में बिजली की उपलब्धता कैसी है और बड़े उपकरणों का उपयोग कितना है ये सब फर्क डालते हैं। यह असर हर देश में अलग-अलग दिखता है। जैसे कुछ अफ्रीकी देशों में मोटरसाइकिल का उपयोग मुख्य कारण है, जबकि यूरोप के कुछ देशों में शहर और गांव का अंतर ज्यादा महत्वपूर्ण है। भारत जैसे देशों में खाना पकाने के लिए इस्तेमाल होने वाले ईंधन का बड़ा प्रभाव देखा गया है। इससे साफ होता है कि एक ही नीति हर जगह एक जैसा असर नहीं डालती। अध्ययन यह चेतावनी देता है कि अगर सरकारें केवल आय के आधार पर मुआवजा या छूट देती हैं, तो कई असली प्रभावित परिवार छूट सकते हैं। इससे कभी-कभी असमानता और बढ़ भी सकती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि कार्बन टैक्स जैसी नीतियां सरकार को अतिरिक्त राजस्व भी देती हैं, जिससे सही तरीके से मदद योजनाएं बनाई जा सकती हैं। इस शोध के आधार पर एक ऑनलाइन टूल भी बनाया गया है, जिससे लोग यह समझ सकते हैं कि कार्बन कीमत बढ़ने पर उन पर कितना असर पड़ेगा। यह टूल 88 देशों के लिए उपलब्ध है और व्यक्तिगत स्तर पर प्रभाव का अनुमान देता है। यह अध्ययन दिखाता है कि जलवायु परिवर्तन से लड़ने की नीतियां केवल आर्थिक वर्गों की कहानी नहीं हैं, बल्कि यह लोगों की जीवनशैली, स्थान और ऊर्जा उपयोग से गहराई से जुड़ी हुई हैं। इसलिए भविष्य में ऐसी नीतियां बनानी होंगी जो इन वास्तविक अंतर को ध्यान में रखें, ताकि जलवायु संरक्षण और सामाजिक न्याय दोनों साथ-साथ आगे बढ़ सकें।

भारी वाहनों में इलेक्ट्रिक व हाइड्रोजन की ओर बदलाव से 26 प्रतिशत तक कम हो सकता है उत्सर्जन

न्यूयार्क। डीजल से चलने वाले वैन, बस और ट्रक अभी भी सड़कों पर सबसे ज्यादा इस्तेमाल किए जाते हैं, लेकिन अब स्थिति बदल रही है। इलेक्ट्रिक वाहनों की शुरुआती कीमत ज्यादा होने के बावजूद, कुल मिलाकर उनका उपयोग तेजी से आकर्षक होता जा रहा है। इसका एक बड़ा कारण डीजल ईंधन की बढ़ती कीमतें हैं।

कई देशों और राज्यों में सरकारें अब स्वच्छ वाहनों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन योजनाएं भी शुरू कर रही हैं। उदाहरण के लिए, कुछ क्षेत्रों में इलेक्ट्रिक ट्रकों की खरीद पर रिबेट या छूट दी जा रही है। इसके साथ ही कई बड़ी कंपनियां भी अपने पर्यावरणीय लक्ष्यों के कारण इलेक्ट्रिक डिलीवरी वाहनों को अपना रही हैं। अध्ययन बताते हैं कि मध्यम और भारी वाहन पर्यावरण प्रदूषण में बहुत बड़ा योगदान देते हैं। हालांकि ये सड़क पर चलने वाले कुल वाहनों का केवल लगभग पांच प्रतिशत हैं, लेकिन ये करीब 30 प्रतिशत सड़क परिवहन उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं। इसका मतलब यह है कि अगर इन वाहनों को साफ ऊर्जा पर चलाया जाए, तो प्रदूषण में बड़ी कमी लाई जा सकती है।

अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन के शोधकर्ताओं ने इस विषय पर एक विस्तृत अध्ययन किया है। यह शोध नेचर एनर्जी नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने अलग-अलग प्रकार के ट्रकों और वैन के जीवन चक्र में होने वाले उत्सर्जन का विश्लेषण किया। इसमें छोटे भारी वाहन से लेकर 40 टन वजन तक के बड़े ट्रकों तक को शामिल किया गया। शोधकर्ताओं ने यह भी देखा कि ये वाहन कैसे चलते हैं, जैसे शहरों में बार-बार रुकने वाले डिलीवरी ट्रक या लंबी दूरी तय करने वाले ट्रक। इसके अलावा उन्होंने यह भी अध्ययन किया कि बिजली और हाइड्रोजन किस स्रोत से बनाई जा रही है। अध्ययन में पाया गया कि बैटरी-इलेक्ट्रिक वाहन और हाइड्रोजन फ्यूल सेल वाहन, दोनों ही डीजल की तुलना में काफी कम प्रदूषण पैदा करते हैं। लेकिन सबसे बड़ा अंतर तब दिखाई देता है जब ऊर्जा स्रोत साफ होते हैं। अगर बैटरी-इलेक्ट्रिक वाहन पूरी तरह से नवीकरणीय ऊर्जा से चार्ज किए जाएं, तो वे डीजल वाहनों की तुलना में लगभग 90 प्रतिशत तक कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कर सकते हैं। वहीं अगर वे मौजूदा बिजली ग्रिड से चार्ज हों, तब भी वे लगभग 72 से 82 प्रतिशत तक उत्सर्जन घटा सकते हैं। हाइड्रोजन फ्यूल सेल वाहनों में भी उत्सर्जन कम होता है, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि हाइड्रोजन कैसे बनाई गई है। पारंपरिक तरीके से बने हाइड्रोजन में कमी कम होती है, जबकि नवीकरणीय ऊर्जा से बने ग्रीन हाइड्रोजन में कमी काफी अधिक हो सकती है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि हाइब्रिड वाहन, जो पेट्रोल या डीजल के साथ बिजली का उपयोग करते हैं, केवल सीमित स्तर पर ही उत्सर्जन कम कर पाते हैं। इनमें औसतन केवल एक से 26 प्रतिशत तक की कमी देखी गई। इसका मतलब यह है कि हाइब्रिड तकनीक एक अस्थायी समाधान हो सकती है, लेकिन दीर्घकालिक समाधान नहीं। शोधकर्ताओं के अनुसार, सभी प्रकार के वाहनों में एक समान पैटर्न देखा गया। सबसे ज्यादा उत्सर्जन डीजल वाहनों में होता है, उसके बाद हाइब्रिड, फिर पारंपरिक हाइड्रोजन फ्यूल सेल, फिर सामान्य बिजली से चलने वाले इलेक्ट्रिक वाहन, और सबसे कम उत्सर्जन उन इलेक्ट्रिक वाहनों में होता है जो पूरी तरह नवीकरणीय ऊर्जा से चलते हैं। इस अध्ययन से यह साफ होता है कि भविष्य में परिवहन प्रणाली को स्वच्छ बनाने के लिए इलेक्ट्रिक और हाइड्रोजन तकनीक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। हालांकि शुरुआती लागत अधिक है, लेकिन लंबे समय में यह पर्यावरण और समाज दोनों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है।

बैटरी अपशिष्ट नियमों से बढ़ सकती हैं EV की कीमतें, सायम की चिंता जायज

नई दिल्ली। बैटरी अप?शिष्ट प्रबंधन नियम 2022 बैटरी उत्पादकों (और आयातकों) को यह जिम्मेदारी सौंपता है कि वे पुरानी पड़ चुकी बैटरियों को एकत्रित करें, उनका पुनर्चक्रण अथवा नवीनीकरण सुनिश्चित करें और नई बैटरियों में पुनः प्राप्त सामग्रियों के उपयोग को प्रोत्साहित करें। हालांकि सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैनुफैक्चरर्स (सायम) ने हाल ही में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को चेतावनी दी है कि इस प्रारूप का अनुपालन इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की कीमतों को 3 से 5 फीसदी तक बढ़ा सकता है और औसतन 35 से 40 किलोवॉट-घंटा (केडब्ल्यूएच) बैटरी पैक की लागत में 8,000 से 25,000 रुपये तक का इजाफा कर सकता है।

ऐसे समय में जब भारत में ईवी का प्रसार अभी भी सीमित है तो यात्री कारों में लगभग 2 से 3 फीसदी और दोपहिया व तीन-पहिया वाहनों में कहीं अधिक लागत बढ़ाने वाले नियम उपभोक्ताओं द्वारा इसे अपनाने की गति को धीमा कर सकते हैं। साथ ही, ये सरकार के व्यापक अकार्बनीकरण लक्ष्यों को कमजोर करने का जोखिम पैदा करते हैं।

दूसरी ओर, बैटरी निर्माता चिंतित हैं कि सबको एक ही तराजू में तौलने वाला यह अनुपालन ढांचा घरेलू बैटरी उत्पादन की व्यावसायिक व्यवहार्यता को कमजोर कर सकता है। पैनासोनिक एनर्जी इंडिया ने चेतावनी दी है कि मौजूदा नियम भारत में उसके एकमात्र ड्राई-सेल जिंक-कार्बन बैटरी निर्माण संयंत्र को बंद करने पर विवश कर सकते हैं क्योंकि अनुपालन लागत लाभ से अधिक हो सकती है और कुछ मामलों में पुनर्चक्रण की बाध्यता पुनः प्राप्त सामग्रियों के मूल्य से भी अधिक महंगी पड़ सकती है।

कंपनी ने यह भी संकेत किया है कि नियम विभिन्न रसायन संरचनाओं वाली बैटरी श्रेणियों के बीच पर्याप्त भेद नहीं करते। इसके अलावा छोटे आकार की बैटरियों को एकत्र करने के लिए कोई मजबूत तंत्र भी नहीं है।

वाहन क्षेत्र की चिंता यह है कि मौजूदा नियम विनिर्माताओं को आठ वर्षों के उपयोग के बाद 70 फीसदी बैटरियों को एकत्रित करना शुरू करने के लिए बाध्य करते हैं। हालांकि लीथियम आयरन फॉस्फेट बैटरियां जो किफ़ायती ईवी के लिए तेजी से पसंदीदा विकल्प बन रही हैं, वे आठ वर्षों के बाद भी अपनी मूल क्षमता का 70 से 80 फीसदी बनाए रखती हैं और वाहनों में सेवा जारी रख सकती हैं।

इसके अलावा इनको स्थिर ऊर्जा भंडारण के लिए दोबारा प्रयोग में लाया जा सकता है। केवल आयु के आधार पर संग्रहण को अनिवार्य करना, वास्तविक बैटरी स्वास्थ्य को अनदेखा करता है और यह गलत धारणा पैदा कर सकता है कि बैटरियों को बदलना आवश्यक है जबकि वे पूरी तरह से उपयोग करने लायक बनी रहती हैं। यही वजह है कि भारत की पुनर्चक्रण नीति को जमीनी हालात और तकनीकी विकास को भी ध्यान में रखना चाहिए। इसी तरह विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (ईपीआर) प्रमाणपत्रों की कीमत को पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति (दंड) से जोड़ने के बजाय बैटरी पुनर्चक्रण को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने के लिए आवश्यक वास्तविक राशि से जोड़ा जाना चाहिए। इससे अनुपालन लागत का अनुमान लग सकेगा और पुनर्चक्रण अधोसंरचना ढांचे में निवेश को प्रोत्साहन मिलेगा।

ऐसे सुधार भारत के बैटरी पारिस्थितिकी तंत्र के विस्तार के साथ लगातार महत्त्वपूर्ण होते जा रहे हैं। नीति आयोग का अनुमान है कि 2030 तक उन्नत रसायन वाली बैटरियों की मांग सालाना 260 गीगावॉट-घंटा (जीडब्ल्यूएच) से अधिक हो सकती है जबकि अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार 2050 तक वैश्विक स्तर पर महत्त्वपूर्ण खनिजों की मांग तीन गुना से अधिक बढ़ सकती है। इसलिए इन सामग्रियों को कुशल पुनर्चक्रण के माध्यम से पुनः प्राप्त करना आयात निर्भरता को कम करने और आपूर्ति श्रृंखला के लचीलेपन को मजबूत करने के लिए एक रणनीतिक जरूरत है।

यूरोपीय संघ के बैटरी विनियमन ने डिजिटल बैटरी पासपोर्ट पेश किए हैं जो बैटरी की संरचना, स्वास्थ्य और उसके जीवनचक्र को दर्ज करते हैं, जिससे पुनः उपयोग, नवीनीकरण और पुनर्चक्रण पर अधिक बेहतर निर्णय लेना संभव होता है। अमेरिका अपने ऊर्जा विभाग के रीसेल कार्यक्रम के माध्यम से उन्नत पुनर्चक्रण तकनीकों में निवेश कर रहा है जो सामग्री की अधिकतम पुनः प्राप्ति सुनिश्चित करती हैं और ऐसी बैटरी डिजाइन को समर्थन देती हैं जिसका पुनर्चक्रण आसान हो। आगे का रास्ता डिजिटल ट्रैकिंग के माध्यम से बैटरी को ट्रेस करने, अधिकृत पुनर्चक्रण क्षमता का विस्तार, अनौपचारिक पुनर्चक्रण की मजबूत निगरानी और विकसित होती बैटरी तकनीकों के आधार पर तकनीकी मानकों की समय-समय पर समीक्षा में निहित है। एक लचीला, विज्ञान-आधारित पुनर्चक्रण ढांचा भारत की पर्यावरण के अनुकूल गतिशीलता महत्त्वाकांक्षाओं को बेहतर समर्थन देगा। महत्त्वपूर्ण खनिज सुरक्षा को मजबूत करेगा और एक वास्तविक चक्रीय बैटरी प्रणाली का निर्माण करेगा।

यूरोप में प्रचंड गर्मी बनी आफत, फ्रांस में 1,000 लोगों की गई जान

लंदन । यूरोप महाद्वीप इन दिनों रिकॉर्ड तोड़ भीषण गर्मी के प्रकोप से जूझ रहा है, जिसके कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है और कई देशों में सैकड़ों लोगों की जान चली गई है। फ्रांस की पब्लिक हेल्थ एजेंसी ने रविवार को बताया कि पिछले सप्ताह रिकॉर्ड-तोड़ गर्मी के दौरान देश में लगभग 1,000 अतिरिक्त मौतें दर्ज की गईं। वहीं, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के प्रमुख ने गंभीर चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि यूरोप अब पृथ्वी पर सबसे तेज़ी से गर्म होने वाला महाद्वीप बन गया है और उसे अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए तत्काल और अधिक प्रभावी कदम उठाने की जरूरत है।

पिछले सप्ताह वीकेंड पर कई यूरोपीय देशों में तापमान के पुराने रिकॉर्ड टूट गए। जर्मनी में नीसेमुंडे में तापमान 41.7 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जो लगातार तीसरे दिन एक नया रिकॉर्ड था। चेक गणराज्य में भी अब तक का सबसे गर्म दिन दर्ज किया गया, जहां तापमान 41.1 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। ब्रिटेन में पूर्वी इंग्लैंड में तापमान 37.3 डिग्री सेल्सियस और स्विट्जरलैंड के बेसल में 38.8 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जिसने जून महीने के तापमान के नए रिकॉर्ड स्थापित किए। वर्ल्ड वेदर एट्रिब्यूशन नामक यूरोपीय वैज्ञानिकों के एक समूह की एक नई स्टडी में बताया गया है कि पिछले हफ्ते यूरोप में पड़ी रिकॉर्ड-तोड़ गर्मी और उमस, जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज) के बिना संभव नहीं होती। इस तेजी से की गई स्टडी में पाया गया कि इतनी गर्मी का होना सिर्फ 50 साल पहले लगभग नामुमकिन था, और आज इसके होने की संभावना 20 साल पहले की तुलना में 200 गुना ज्यादा है, जो ग्लोबल वार्मिंग के भयावह प्रभावों को दर्शाता है। पब्लिक हेल्थ फ्रांस के अनुसार, जिस बुधवार को फ्रांस में सबसे ज्यादा गर्मी पड़ रही थी, तब 1,200 से अधिक मौतें हुईं, और उसके बाद के दो दिनों में हर दिन मौतों की संख्या बढ़कर 1,400 से अधिक हो गई। अप्रैल और मई में, यानी हीटवेव से पहले, फ्रांस में रोजाना मौतों की दर लगभग 900 से 1,000 थी, जिससे अतिरिक्त मौतों का आंकड़ा स्पष्ट होता है। डब्ल्यूएचओ के महानिदेशक टेड्रोस अदानोम घेब्रेयेसस ने भी बताया कि 21 जून के बाद से यूरोप में अत्यधिक तापमान की वजह से कुल 1,300 से अधिक अतिरिक्त मौतें दर्ज की गई हैं।

औद्योगिक विकास और सौर ऊर्जा परियोजनाओं पर केंद्रित लघु फिल्मों का हुआ प्रदर्शन

इंदौर (नगर प्रतिनिधि)स्वच्छ एवं हरित ऊर्जा उत्पादन क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए मध्यप्रदेश ने सोमवार को हरित विकास की दिशा में एक बड़ा कदम बढ़ाया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने केन्द्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी के साथ नीमच में 500 मेगावॉट क्षमता वाले नीमच सोलर पार्क तथा 450 मेगावॉट क्षमता वाले शाजापुर सोलर पार्क का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में महिला एवं बाल विकास तथा नीमच जिले की प्रभारी मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया, नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री राकेश शुक्ला सहित जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव एवं केंद्रीय मंत्री श्री जोशी ने 1,553.98 करोड़ रुपये की विभिन्न औद्योगिक इकाइयों एवं विकास कार्यों का भी भूमि-पूजन और लोकार्पण किया। इन परियोजनाओं से प्रदेश में औद्योगिक निवेश को नई गति मिलने के साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। विभागीय अधिकारियों ने बताया कि 550 मेगावॉट क्षमता वाला आगर सोलर पार्क भी निर्माणाधीन है, जिसकी इकाइयों के लिए 2.44 और 2.45 रुपये प्रति यूनिट की दरें प्राप्त हुई हैं। इन परियोजनाओं के पूर्ण होने के बाद मध्यप्रदेश देश के अग्रणी सौर ऊर्जा उत्पादक राज्यों में अपनी स्थिति और मजबूत करेगा तथा स्वच्छ ऊर्जा, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने नीमच जिले में करीब 160 करोड़ रुपये की लागत से 98 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश का हरित विकास हमारा लक्ष्य है। हरित विकास के जरिए प्रदेश में अधिकाधिक मात्रा में निवेश लाने और इसके जरिए रोजगार के नए अवसर पैदा करने के लिए हम तेजी से काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश बिजली उत्पादन में आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ अब स्वच्छ, सस्ती और टिकाऊ ऊर्जा से इस क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि नीमच, मंदसौर, रतलाम, उज्जैन उत्तर-पश्चिमी मध्यप्रदेश के नए औद्योगिक ग्रोथ इंजन के रूप में विकसित हो रहे हैं। नीमच न केवल मध्यप्रदेश का, बल्कि ग्रीन पॉवर सेक्टर का ग्लोबल कैपिटल बन रहा है। उन्होंने बताया कि यहां देश का सबसे बड़ा पंप स्टोरेज बन रहा है। नीमच जिले में कुल 675 मेगावाट क्षमता की सौर परियोजनाएं कार्यशील हैं और लगभग 1 हजार 952 से अधिक मेगावाट क्षमता की सौर परियोजनाओं का निर्माण कार्य तेजी से जारी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि नीमच में नए सोलर पार्क का शुभारंभ ऐतिहासिक अवसर है। इससे देश में सबसे सस्ती दर पर बिजली उपलब्ध होगी। नीमच की धरती ने प्रदेश को दो मुख्यमंत्री दिए। नीमच ने अफीम उत्पादन और नेत्रदान अभियान में शीर्ष स्थान हासिल कर अपनी अलग पहचान बनाई है। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को संत कबीर जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सनातन संस्कृति में सूर्य देवता ऊर्जा के स्त्रोत हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में संचालित जल गंगा संरक्षण अभियान के अंतर्गत 19 मार्च से 30 जून तक कुंए, बावड़ी, नदी, तालाब और अन्य सभी जल स्त्रोतों के संरक्षण के उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। राज्य सरकार ने 3 महीने में 10 हजार करोड़ की राशि खर्च कर प्रदेशभर में 2 लाख से अधिक जल स्त्रोतों का जीर्णोद्धार किया है। जल गंगा संरक्षण अभियान में नीमच ने देश में 10वां और प्रदेश में प्रथम स्थान हासिल किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने म.प्र. के बोर्ड परीक्षा परिणामों में टॉप 10 में स्थान बनाने वाले नीमच के विद्यार्थियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केंद्रीय मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी की मौजूदगी में आज 2 बड़ी सौर परियोजनाओं का लोकार्पण हुआ है। कुल 2080 करोड़ की लागत से नीमच में 500 मेगावॉट और शाजापुर में 450 करोड़ मेगावॉट के सोलर पार्क की सौगात मिली है। साथ ही नीमच में 1553.98 करोड़ की 38 औद्योगिक इकाइयों और अन्य विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन भी हुआ है। नीमच के नए सोलर पार्क से 2.14 पैसे प्रति यूनिट बिजली मिलेगी, जो देश में सबसे सस्ती दर है। प्रदेश में रोजगार आधारित उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है। मध्यप्रदेश सबसे तेज गति से रोजगार देने वाला राज्य है। प्रदेश में फूड पार्क, पीएम मित्र पार्क तैयार किए जा रहे हैं। नीमच में 1200 करोड़ से अधिक लागत का सोलर ग्लास तैयार करने वाले प्लांट का भूमि-पूजन हुआ है। नीमच को बहुत जल्द जावरा-उज्जैन होकर भोपाल राजमार्ग की सौगात मिलने वाली है। मंदसौर से भोपाल तक नया हाई-वे भी बनाया जाएगा। नीमच में गांधी सागर अभ्यारण्य चीतों का नया घर बन चुका है। बहुत जल्द यहां दो और चीते मुक्त प्राकृतिक आवास में छोड़े जाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केंद्र सरकार के सहयोग से प्रदेश के किसानों से गेहूं का एक-एक दाना खरीदा गया है। किसानों को गेहूं के लिए 2625 रुपए प्रति क्विंटल कीमत का भुगतान किया है। राज्य सरकार ने इस वर्ष 104 लाख मीट्रिक टन के लक्ष्य से अधिक गेहूं खरीदा है। गेहूं के उत्पादन और खरीदी में मध्यप्रदेश ने पंजाब जैसे राज्य को पीछे छोड़ दिया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार अब किसानों को सिंचाई के लिए दिन में भी बिजली उपलब्ध करा रही है। किसान कल्याण वर्ष में सरकार किसानों के साथ खड़ी है। प्रदेश के किसानों को शून्य ब्याज दर पर आवश्यक लोन मिल रहा है और इसे चुकाने के लिए भी 31 मार्च की बाध्यता खत्म कर दी गई है। किसान जिस तारीख से लोन लेंगे, उसके अगले 12 माह की अवधि में किसी भी तारीख पर लोन चुकाने की सुविधा मिलेगी। हमारे लिए सीमा पर जवान और खेतों में किसान दोनों का बराबर सम्मान है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की 1 करोड़ 25 लाख से अधिक लाड़ली बहनों को हर माह 1500 रुपए की राशि दी जा रही है। राज्य सरकार ने गरीब-जरूरतमंदों को समय पर इलाज उपलब्ध कराने के लिए पीएमश्री एयर एंबुलेंस की शुरुआत की है। राहवीर योजना में भी सड़क हादसों के घायलों की मदद करने वालों को 25 हजार रुपए की प्रोत्साहन राशि दी जा रही है। प्रदेश में श्रीराम गमन पथ और श्रीकृष्ण पाथेय का निर्माण कार्य तेजी से पूर्ण किया जा रहा है। राज्य में भव्य सांदीपनि विद्यालय और प्रत्येक नगरीय निकायों में गीता भवन तैयार किए जा रहे हैं। प्रत्येक ब्लॉक के एक गांव को वृंदावन गांव के रूप में विकसित किया जा रहा है। राज्य सरकार दूध उत्पादन को बढ़ावा दे रही है। डॉ. भीमराम अंबेडकर कामधेनु योजना के अंतर्गत 40 लाख लागत की गोशाला शुरू करने पर राज्य सरकार 10 लाख रुपए का अनुदान दे रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नीमच में भादवा माता मंदिर परिसर में विकास कार्यों के लिए 17 करोड़ रुपए स्वीकृत करने की घोषणा की। उन्होंने जल गंगा संवर्धन अभियान में अव्वल रहे नीमच जिले की पंचायतों को जल संचयन कार्यों में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए सम्मानित भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पिछले ढाई वर्षों में 33 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव मिले। करीब 10 लाख करोड़ के प्रस्ताव जमीन पर उतरे। पिछले ढाई वर्षों में वैश्विक कंपनियों का 9 हजार 200 करोड़ से अधिक का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश मध्यप्रदेश की धरती पर उतर रहा है, जिससे 4,200 से अधिक नौकरियां सृजित हो रही हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008